The Hindu Plus Summary : 14.02.2024

मेन्स मास्टर

भारत को गहन औद्योगीकरण की आवश्यकता क्यों है?

प्रसंग:

* **वैश्वीकरण की वापसी:** COVID-19 महामारी ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं को बाधित कर दिया, जिससे संरक्षणवाद का पुनरुत्थान हुआ और आत्मनिर्भरता की ओर बदलाव आया। यह प्रवृत्ति भारत के लिए चुनौतियाँ और अवसर दोनों प्रस्तुत करती है।

* **भारत का विकास प्रक्षेपवक्र**: जबकि भारत की अर्थव्यवस्था महामारी से उबर गई है, चिंताएँ बनी हुई हैं:

  ◦ **समय से पहले विऔद्योगीकरण**: सकल घरेलू उत्पाद और रोजगार में विनिर्माण की हिस्सेदारी स्थिर रही है, जिससे नौकरियां चली गईं और अवसर चूक गए।

  ◦ **असमान विकास**: महंगे उत्पादों की मजबूत मांग देखी जाती है, जबकि आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में बढ़ोतरी देखी जाती है, जो विकास से होने वाले लाभों के असमान वितरण को उजागर करता है।

  ◦ **उच्च बेरोज़गारी**: खुली बेरोज़गारी और छिपी हुई बेरोज़गारी (कृषि में अल्प रोज़गार) दोनों ही महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पैदा करती हैं।

पृष्ठभूमि:

* **स्थिर औद्योगीकरण**: दशकों के प्रयासों के बावजूद, भारत अन्य विकासशील देशों में देखे जाने वाले औद्योगीकरण के स्तर को हासिल नहीं कर पाया है। 2003-2008 के बीच की संक्षिप्त अवधि को छोड़कर, विनिर्माण की हिस्सेदारी 20% से नीचे बनी हुई है।

* **सेवा-आधारित विकास की सीमाएँ**: सेवा क्षेत्र, विशेष रूप से आईटी, ने प्रभावशाली वृद्धि देखी है, लेकिन इसने निम्नलिखित पर ध्यान नहीं दिया है:

  ◦ **रोजगार अवशोषण**: सेवाओं ने कृषि से बाहर निकलने वाले कार्यबल को अवशोषित करने के लिए पर्याप्त नौकरियां पैदा नहीं की हैं, जिससे उच्च बेरोजगारी हुई है।

  ◦ **कौशल बेमेल**: यह क्षेत्र अत्यधिक कुशल श्रमिकों की मांग करता है, जिसे भारत पर्याप्त रूप से आपूर्ति करने के लिए संघर्ष करता है, जिससे असमानताएं और असमानताएं पैदा होती हैं।

  ◦ **असमानता का बढ़ना**: सेवा क्षेत्र में वेतन, विशेष रूप से उच्च कुशल भूमिकाओं के लिए, विनिर्माण क्षेत्र की तुलना में काफी अधिक है, जिससे समाज के विभिन्न वर्गों के बीच आय का अंतर बढ़ जाता है।

गहन औद्योगीकरण:

* **उत्पादन वृद्धि से परे:** गहन औद्योगीकरण केवल विनिर्माण उत्पादन को बढ़ाने से परे है। इसका लक्ष्य है:

  ◦ **बड़े पैमाने पर रोजगार सृजित करें**: आबादी के एक बड़े हिस्से, विशेषकर कृषि छोड़ने वालों के लिए टिकाऊ और अच्छी तनख्वाह वाली नौकरियां पैदा करें।

  ◦ **नवाचार और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना:** विभिन्न उद्योगों में नवाचार और तकनीकी प्रगति की संस्कृति को बढ़ावा देना, समग्र उत्पादकता और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा देना।

  ◦ **समाज को बदलें**: एक सामाजिक बदलाव पैदा करें जो उत्पादन, श्रम और तकनीकी कौशल को महत्व देता है, जिससे एक अधिक समावेशी और गतिशील अर्थव्यवस्था बनती है।

गहन औद्योगीकरण की आवश्यकता:

***बेरोज़गारी संकट का समाधान**: उच्च बेरोजगारी और अल्परोज़गार प्रमुख सामाजिक और आर्थिक चुनौतियाँ पैदा करते हैं। गहन औद्योगीकरण लाखों नई नौकरियाँ पैदा कर सकता है, और अधिक स्थिर और समृद्ध समाज में योगदान दे सकता है।

* **व्यापार घाटा कम करें:** आयातित वस्तुओं, विशेष रूप से निर्मित वस्तुओं पर भारत की निर्भरता, व्यापार घाटे को बढ़ाने में योगदान करती है। गहन औद्योगीकरण के माध्यम से घरेलू उत्पादन इस अंतर को पाटने में मदद कर सकता है।

* **समावेशी विकास को बढ़ावा देना**: विभिन्न कौशल स्तरों और क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा करके, गहन औद्योगीकरण धन के अधिक न्यायसंगत वितरण को बढ़ावा दे सकता है और आय असमानता को कम कर सकता है।

* **चुनौतियाँ**:

  ◦ **जन शिक्षा में अंतर**: जन शिक्षा की गुणवत्ता अपर्याप्त बनी हुई है, जिससे उन्नत विनिर्माण के लिए आवश्यक कुशल कार्यबल के विकास में बाधा आ रही है।

  ◦ **असमान उच्च शिक्षा**: हालांकि उच्च शिक्षा तक पहुंच में सुधार हुआ है, गुणवत्ता में असमानताएं बनी हुई हैं, खासकर ग्रामीण और शहरी संस्थानों के बीच, जिससे कई लोगों के लिए अवसर सीमित हो गए हैं।

  ◦ **सांस्कृतिक असंगति**: कुछ शारीरिक और व्यावसायिक नौकरियों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण अक्सर नकारात्मक होते हैं, जो इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्रतिभा को आकर्षित करने और बनाए रखने में बाधा पैदा करते हैं।

* **आवश्यक कार्यवाही**:

  ◦ **सामूहिक और व्यावसायिक शिक्षा में निवेश करें**: प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता को उन्नत करें, साथ ही औद्योगिक आवश्यकताओं के अनुरूप प्रासंगिक व्यावसायिक कौशल विकसित करने पर भी ध्यान केंद्रित करें।

  ◦ **सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देना:** ब्लू-कॉलर नौकरियों के लिए जागरूकता और सराहना पैदा करना, समाज में उनके महत्व और योगदान पर प्रकाश डालना।

  ◦ **शिक्षा विभाजन को पाटना:** सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुंच सुनिश्चित करते हुए ग्रामीण और छोटे शहरों के स्कूलों और कॉलेजों की गुणवत्ता में सुधार करना।

आगे बढ़ने का रास्ता:

* **विनिर्माण एकीकरण पर ध्यान दें**: गहन औद्योगीकरण का मतलब सेवा क्षेत्र की उपेक्षा नहीं है। इसके बजाय, यह एक मजबूत विनिर्माण आधार के विकास पर जोर देता है जो सेवाओं के विकास के साथ एकीकृत हो सकता है और समर्थन कर सकता है।

* **मुख्य बाधाओं को दूर करें:** गहन औद्योगीकरण को फलने-फूलने के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के लिए शैक्षिक और सांस्कृतिक बाधाओं पर काबू पाने को प्राथमिकता दें।

* **दीर्घकालिक दृष्टिकोण को अपनाएं:** गहन औद्योगीकरण एक परिवर्तनकारी उपक्रम है जिसके लिए दीर्घकालिक दृष्टिकोण, निरंतर प्रतिबद्धता और नीति निर्माताओं, उद्योग जगत के नेताओं और शैक्षणिक संस्थानों के सहयोगात्मक प्रयासों की आवश्यकता होती है।

सी राजा मोहन लिखते हैं: खाड़ी के साथ घनिष्ठ संबंधों में, भारतीय कूटनीति के लिए एक महत्वपूर्ण जीत

प्रसंग:

* **प्रधानमंत्री मोदी की संयुक्त अरब अमीरात और कतर की यात्रा:** यह यात्रा खाड़ी क्षेत्र के साथ भारत के संबंधों के बढ़ते महत्व को रेखांकित करती है, जो दो महत्वपूर्ण घटनाओं से चिह्नित है:

  ◦ **अबू धाबी में हिंदू मंदिर का उद्घाटन:** यह इस्लामी दुनिया में धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक स्वीकृति में एक ऐतिहासिक उपलब्धि का प्रतीक है।

  ◦ **हिरासत में लिए गए भारतीय कर्मियों की रिहाई**: यह संवेदनशील मुद्दों को संबोधित करने में विश्वास और सहयोग के एक नए स्तर पर प्रकाश डालता है।

पृष्ठभूमि:

* **ऐतिहासिक रूप से सीमित जुड़ाव**: जब व्यापार अस्तित्व में था, खाड़ी के साथ भारत का राजनीतिक और राजनयिक जुड़ाव मुख्य रूप से तेल आयात, श्रम निर्यात और प्रेषण तक सीमित था।

* **"खलीजी राजधानी" का उदय**: तेल भंडार से धन के संचय ने बढ़ते वैश्विक प्रभाव के साथ खाड़ी में, विशेष रूप से सऊदी अरब, कतर और संयुक्त अरब अमीरात में शक्तिशाली वित्तीय केंद्र बनाए।

* **भारत की आर्थिक महत्वाकांक्षाएँ**: आर्थिक विकास के लिए भारत की आकांक्षाओं ने अपने भागीदारों और पूंजी के स्रोतों के विविधीकरण की मांग की।

t.me/pragyeshIASMENTOR Pragyesh IAS pragyesh.org

भारत-खाड़ी संबंधों का विकास:

कूटनीतिक बदलाव:

* **बार-बार यात्राएं और व्यक्तिगत संबंध:** प्रधान मंत्री मोदी की क्षेत्र की कई यात्राओं और खाड़ी नेताओं के साथ व्यक्तिगत संबंध बनाने पर ध्यान केंद्रित करने से विश्वास और समझ में वृद्धि हुई है।

* **फोकस में बदलाव**: "अरब कारणों" के लिए केवल समर्थन से आगे बढ़ते हुए, भारत ने व्यापक रणनीतिक साझेदारी को अपनाया है, जो इस तरह की पहलों में स्पष्ट है:

  ○ **I2U2 समूह**: प्रौद्योगिकी और व्यापार जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सहयोग के लिए भारत, इज़राइल, अमेरिका और संयुक्त अरब अमीरात को एक साथ लाना।

  ○ **भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा**: भारत, खाड़ी और यूरोप के बीच आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देना।

राजनीतिक पुनर्अभिविन्यास:

* **"पाकिस्तान जुनून" पर काबू पाना:** भारत ऐतिहासिक बोझ से आगे बढ़ गया है और पाकिस्तान के साथ पिछले संबंधों के बावजूद, खाड़ी देशों के साथ मजबूत संबंध बनाए हैं।

* **धर्म पर व्यावहारिकता**: धार्मिक मतभेदों से परे साझा हितों और आर्थिक अवसरों को पहचानने से घनिष्ठ सहयोग को बढ़ावा मिला है।

आर्थिक परिवर्तन:

* **लेन-देन से लेकर रणनीतिक तक**: यह संबंध साधारण तेल खरीद और प्रेषण से आगे बढ़कर निवेश, संयुक्त उद्यम और विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान साझा करने तक विकसित हुआ है:

  ○ **हरित ऊर्जा**: भारत और खाड़ी जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा सुरक्षा को संबोधित करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा समाधान पर सहयोग कर सकते हैं।

  ○ **अंतरिक्ष अन्वेषण:** अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में विशेषज्ञता और संसाधनों को साझा करने से दोनों क्षेत्रों को लाभ हो सकता है।

  ○ **सेमीकंडक्टर और एआई**: इन अत्याधुनिक उद्योगों में निवेश करने से आपसी विकास की अपार संभावनाएं हैं।

आतंकवाद विरोधी सहयोग:

* **उग्रवाद के खिलाफ सहयोग:** हालांकि प्रगति हुई है, खुफिया जानकारी साझा करने और आतंकवादी खतरों के खिलाफ समन्वित कार्रवाई को और मजबूत करने की गुंजाइश है।

* **अविकसित रक्षा साझेदारी**: सैन्य आदान-प्रदान में हालिया वृद्धि के बावजूद, रक्षा प्रौद्योगिकियों का संयुक्त विकास और विस्तारित सैन्य सहयोग महत्वपूर्ण अप्रयुक्त क्षमता प्रदान करते हैं।

अभिसरण वास्तविकताएँ:

* **रक्षा साझेदारियों में विविधता लाना**: क्षेत्रीय अनिश्चितताओं के बीच, खाड़ी देश पारंपरिक साझेदारों से परे देख रहे हैं और भारत को क्षेत्रीय सुरक्षा में एक संभावित सहयोगी के रूप में देख रहे हैं।

* **उभरते भू-राजनीतिक खिलाड़ी:** सऊदी अरब, कतर और संयुक्त अरब अमीरात भारत के रणनीतिक हितों के अनुरूप पश्चिमी हिंद महासागर, मध्य पूर्व और भूमध्य सागर में तेजी से प्रभावशाली हो रहे हैं।

संबंधों पर प्रभाव डालने वाली महान उथल-पुथल:

* **यूक्रेन युद्ध और वैश्विक प्रभाव**: भारत को यूक्रेन संघर्ष के सामने पश्चिम के साथ अपनी रणनीतिक साझेदारी को बरकरार रखते हुए खाड़ी के साथ मजबूत संबंध बनाए रखने के लिए एक नाजुक संतुलन कार्य का सामना करना पड़ रहा है।

सतर्क दृष्टिकोण की आवश्यकता:

* **जटिल क्षेत्रीय गतिशीलता से निपटना:** खाड़ी क्षेत्र विभिन्न संघर्षों और हस्तक्षेपों का अनुभव करता है, और भारत को उलझने से बचने के लिए इन जटिलताओं से सावधानीपूर्वक निपटना चाहिए।

* **साझेदारी को संतुलित करना**: खाड़ी और अमेरिका और इज़राइल जैसे अन्य प्रमुख साझेदारों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखने के लिए कुशल कूटनीति की आवश्यकता होती है।

आगे बढ़ने का रास्ता:

* **क्षेत्रीय सुरक्षा और समृद्धि को बढ़ावा देना**: समुद्री सुरक्षा, व्यापार सुविधा और पश्चिमी हिंद महासागर में बुनियादी ढाँचे के विकास जैसे क्षेत्रों में खाड़ी के साथ सहयोग को गहरा करना।

* **रक्षा सहयोग का विस्तार करें:** रक्षा प्रौद्योगिकियों और उपकरणों के संयुक्त विकास का पता लगाएं, और अंतरसंचालनीयता बढ़ाने के लिए नियमित सैन्य अभ्यास करें।

* **मोदी के तीसरे कार्यकाल में साहसिक एजेंडा**: आपसी लाभ, रणनीतिक साझेदारी और दीर्घकालिक सहयोग के क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए खाड़ी क्षेत्र के साथ एक व्यापक और महत्वाकांक्षी एजेंडा को आगे बढ़ाना।

एक अच्छी तरह से परिभाषित रणनीति और पारस्परिक लाभ के प्रति प्रतिबद्धता के साथ उभरते भू-राजनीतिक परिदृश्य को नेविगेट करके, भारत और खाड़ी वास्तव में परिवर्तनकारी साझेदारी बना सकते हैं जो उनके साझा हितों को सुरक्षित करती है और क्षेत्रीय स्थिरता और समृद्धि में योगदान देती है।

17वीं लोकसभा के कई निचले स्तर

17वीं लोकसभा में प्रथम:

* **कोई उपसभापति नहीं:** यह महत्वपूर्ण पद, जिसका उद्देश्य सदन की अध्यक्षता का बोझ साझा करना और निष्पक्ष प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना था, पूरे कार्यकाल के दौरान खाली रहा, जिससे नियंत्रण और संतुलन कमजोर हो गया।

* **बैठकों की सबसे कम संख्या:** केवल 274 बैठकों के साथ, 17वीं लोकसभा के पास विधायी कार्य और विचार-विमर्श के लिए पिछले कार्यकाल की तुलना में काफी कम समय था, जिससे इसका समग्र उत्पादन गंभीर रूप से सीमित हो गया।

* **न्यूनतम विरोध के साथ पारित हुआ कानून**: 70% से अधिक विपक्षी सांसदों के निलंबित होने के बावजूद आपराधिक सुधार जैसे महत्वपूर्ण विधेयकों को आगे बढ़ाया गया, जिससे लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और पारदर्शिता के बारे में चिंताएं बढ़ गईं।

Chart 2: The chart shows the number of sittings in days (left axis) and sitting hours (right axis) per Lok Sabha

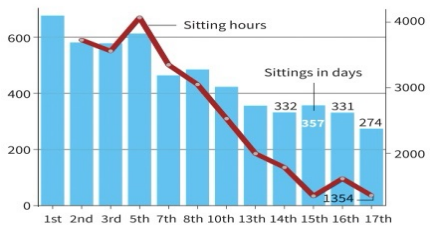

* **सीमित प्रधान मंत्री स्तरीय बातचीत**: प्रधान मंत्री द्वारा केवल एक लिखित प्रश्न का उत्तर दिए जाने के साथ, 17 वीं लोकसभा में सर्वोच्च कार्यकारी प्राधिकरण और विधायी निकाय के बीच प्रत्यक्ष जवाबदेही और संवाद का घोर अभाव देखा गया।

दीर्घकालिक रुझान:

* **विधेयक पारित होने में गिरावट**: प्रति लोकसभा पारित विधेयकों की औसत संख्या 1952-1990 की अवधि में 65 से घटकर 1991-2023 में 48 हो गई है, जो विधायी उत्पादकता में संभावित मंदी का संकेत देती है।

Chart 1: This shows the number of Bills passed (left axis) by the Lok Sabha and the % of bills scrutinised (right axis)

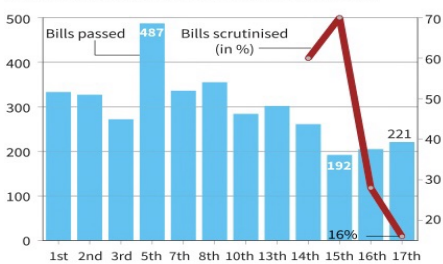

* **समितियों द्वारा जांच में कमी**: विस्तृत जांच के लिए समितियों को बिल भेजने की प्रथा कम हो गई है, 17वीं लोकसभा ने केवल 16% बिल जांच के लिए भेजे हैं, जिससे संपूर्णता और संभावित खामियों के बारे में चिंताएं बढ़ गई हैं।

* **सीमित बहस और भागीदारी**: छोटे सत्र और कम बैठने के घंटे सांसदों द्वारा व्यापक बहस और सार्थक भागीदारी के अवसरों को सीमित करते हैं, जिससे विधायी भागीदारी की गुणवत्ता कम हो जाती है।

सीमित संसदीय उपकरण:

* **आधे घंटे की चर्चाएँ:** ये चर्चाएँ सांसदों को सवालों के जवाबों में गहराई से उतरने की अनुमति देती हैं, लेकिन उनकी आवृत्ति 1990 से पहले प्रति लोकसभा 88 के औसत से घटकर 1990 के बाद केवल 11 रह गई है, जो जवाबदेही तंत्र में गिरावट को उजागर करती है।

Made with Goodnotes

*** छोटी अवधि की चर्चाएँ**: सांसदों के लिए जरूरी मुद्दों पर संक्षिप्त चर्चा शुरू करने के अवसरों में भी गिरावट आई है, जो 1990 से पहले प्रति लोकसभा औसतन 46 से घटकर 1990 के बाद 39 रह गई है, जिससे प्रासंगिक चिंताओं को उठाने की उनकी क्षमता और भी सीमित हो गई है।

*** ध्यानाकर्षण नोटिस**: अत्यावश्यक मामलों पर ध्यान आकर्षित करने के लिए इस महत्वपूर्ण उपकरण के उपयोग में भारी गिरावट देखी गई है, 1990 से पहले प्रति लोकसभा औसतन 300 नोटिस की अनुमति दी गई थी, जबकि 1990 के बाद केवल 40 नोटिस की अनुमति दी गई थी, जो असहमति और असहमति को दबाने की संभावना का संकेत देता है। समस्या को सुलझाना।

*** स्थगन प्रस्ताव**: स्थगन प्रस्तावों के माध्यम से सरकारी नीतियों के साथ मजबूत असहमति व्यक्त करने की क्षमता लगभग गायब हो गई है, 16वीं और 17वीं लोकसभा में ऐसे किसी भी प्रस्ताव की अनुमति नहीं है, जिससे विधायी नियंत्रण और संतुलन के क्षरण के बारे में चिंता बढ़ गई है।

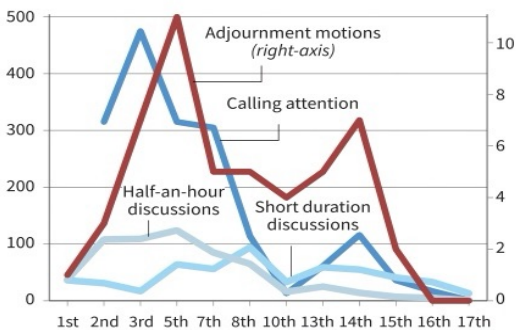

Chart 3: The chart shows the usage of various parliamentary tools per Lok Sabha

*** बजट और वित्त विधेयक की जांच**: महत्वपूर्ण केंद्रीय बजट, मंत्रालय की मांगों और वित्त विधेयक पर चर्चा करने के लिए समर्पित समय काफी कम हो गया है, 1990 से पहले सालाना लगभग 120 घंटे से घटकर 1990 के बाद मात्र 35 घंटे रह गया है, जो संभावित रूप से वित्तीय जांच की गहराई को प्रभावित कर रहा है और निरीक्षण.

Chart 4: The chart shows the time spent on discussing the Union Budget (in hours)

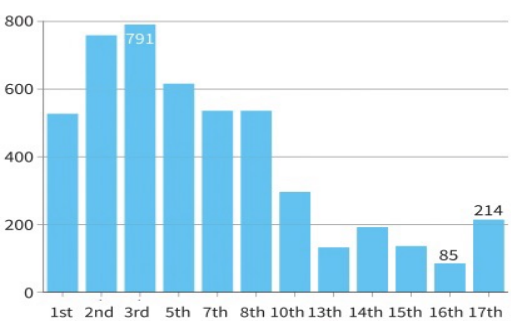

*** मंत्रालय-वार मांगों को दरकिनार कर दिया गया:** मंत्रालय-वार मांगों को बिना चर्चा के पारित करने की चिंताजनक प्रवृत्ति 1952 के बाद से पांच बार हुई है, सभी 1999 के बाद, संसाधन आवंटन में जवाबदेही और पारदर्शिता के बारे में चिंताएं बढ़ गई हैं।

विशेषज्ञ की राय:

* लोकसभा के पूर्व महासचिव डॉ. सुभाष सी कश्यप जैसे विद्वानों ने लंबे समय से इस गिरावट को पहचाना है और तत्काल सुधारों की वकालत की है।

* संसद की सीमा के बाहर एक संसदीय सुधार आयोग या "संसदीय समूह का अध्ययन" की आवश्यकता स्वतंत्र और व्यापक मूल्यांकन और कार्रवाई की तात्कालिकता पर प्रकाश डालती है।

प्रीलिम्स बूस्टर

औरोरा बोरियालिस

- 🌌 ऑरोरा बोरेलिस, जिसे उत्तरी रोशनी के रूप में भी जाना जाता है, आर्कटिक आकाश में प्रदर्शित एक मंत्रमुग्ध कर देने वाला आकाशीय बैले है, जो हमारे सूर्य और पृथ्वी के वायुमंडल के बीच एक लौकिक सहयोग से उत्पन्न होने वाले अपने जीवंत रंगों, गतिशील नृत्य और वैज्ञानिक भव्यता से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देता है।

Shades of the north

Vast canvas: Aurora borealis, commonly called the northern lights, illuminate the sky above the village of Akaslompolo in Kolari, beyond the Arctic Circle, in Finland on Sunday. AP

- 🌞 सूर्य लगातार आवेशित कणों की एक धारा उत्सर्जित करता है, जिसे सौर हवा के रूप में जाना जाता है, जो पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र का सामना करते समय ध्रुवों की ओर मुड़ जाती है, जिससे उच्च अक्षांश क्षेत्रों में अरोरा बोरेलिस का जादू पैदा होता है।
- 💥 जैसे ही आवेशित कण वायुमंडल में गैस अणुओं, मुख्य रूप से ऑक्सीजन और नाइट्रोजन, से टकराते हैं, वे अणुओं को उत्तेजित करते हैं, जिससे वे प्रकाश के रूप में अतिरिक्त ऊर्जा छोड़ते हैं, जिससे अपने जीवंत हरे, लाल, नीले और चमकीले अरोरा का निर्माण होता है। बैंगनी रंग, प्रत्येक आकाशीय नृत्य में शामिल विशिष्ट गैसों और ऊर्जा स्तरों के बारे में एक कहानी कहता है।
- 🎨 औरोरा गतिशील प्रदर्शन हैं, जो लगातार बदलते और विकसित होते हैं, पर्दे, चाप, सर्पिल और किरणें बनाते हैं जो आकाश को अपनी चमक से रंगते हैं, सौर हवा की ताकत और पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र से प्रभावित होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप एक कभी-बदलने वाला दृश्य होता है .
- 🌐 जबकि ऑरोरा बोरेलिस मुख्य रूप से आर्कटिक आकाश को चित्रित करता है, इसका दक्षिणी समकक्ष, ऑरोरा ऑस्ट्रेलिस, अंटार्कटिक क्षेत्र को रोशन करता है, दोनों एक ही सौर पवन संपर्क से उत्पन्न होते हैं, जो दक्षिणी गोलार्ध में एक समान दृश्य दावत पेश करते हैं।
- 🌍 ऑरोरा बोरेलिस मूल्यवान वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि रखता है, जो हमें सौर गतिविधि, पृथ्वी के वायुमंडल पर इसके प्रभाव और तकनीकी बुनियादी ढांचे के लिए संभावित खतरों को समझने में मदद करता है, जो हमारे ग्रह और सूर्य की परस्पर संबद्धता की याद दिलाता है, जो इसमें खेल रही भव्य शक्तियों को प्रदर्शित करता है। हमारा लौकिक पड़ोस।

ऑटो-इम्यून बीमारियों में एक्स क्रोमोसोम की भूमिका

- एक्स क्रोमोसोम 🧬 की आणविक कोटिंग के कारण महिलाएं ऑटोइम्यून बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं
- एक्स क्रोमोसोम निष्क्रियता प्रक्रिया महिलाओं में महत्वपूर्ण है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि एक्स क्रोमोसोम का एक सेट शरीर की सभी कोशिकाओं में सक्रिय और कार्यात्मक बना रहे जबकि दूसरा बंद हो।
- जो जीन एक्स निष्क्रियता प्रक्रिया से बच जाते हैं उन्हें ऑटोइम्यून बीमारियों का कारण माना जाता है, और एक्सआईएसटी अणु को सूजन संबंधी प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया उत्पन्न करने के लिए जाना जाता है।
- XIST अणु की ओर आकर्षित प्रोटीन स्वप्रतिपिंडों की प्रतिक्रिया को प्रेरित करते हैं, जो स्व-प्रतिजनों के साथ प्रतिक्रिया करते हैं।
- XIST के संशोधित संस्करण का उत्पादन करने वाले बायोइंजीनियर्ड नर चूहों ने उच्च स्तर पर ऑटोएंटीबॉडी और प्रतिरक्षा कोशिकाओं को उच्च स्तर पर दिखाया, जो ऑटोइम्यून हमलों की संभावना का सुझाव देता है।
- XIST केवल दो X गुणसूत्र वाली कोशिकाओं में व्यक्त होता है, जिससे महिलाएं ऑटोइम्यून बीमारियों और हमलों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाती हैं।